कमलेश्वर की कहानियों में महानगर बोध

डॉ. श्रीदेवी.एस
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, सैन्ट जोसफ्स कॉलेज
तिरुच्चिरप्पल्लि, तमिल नाडु, मोबाइल : 9495243814
ई-मेल : sdtvpm@yahoo.com

कमलेश्वर की कहानियों में महानगर बोध के दो स्तर मिलते हैं उनकी प्रारंभिक कहानियों में व्यक्त महानगर बोध का स्वरूप प्रत्यक्ष महानगरीय पृष्ठिका का परिणाम नहीं है। कस्बों या गाँवों में रहने वाले लोगों पर महानगरीय बोध की छाया धीरे-धीरे कैसे मंडरा रही है- इसका चित्रण इन कहानियों में हुआ है। इसलिए महानगरीय पृष्ठिका की अनुपस्थिति में ये कहानियाँ महानगरीय परिणामों का संकेत कस्बाई पृष्ठिका पर छोड़ती हैं। इन कहानियों में लोग गाँव में रहकर ही महानगर के वरदान या अभिशाप को झेलते है। जबकि बाद की कहानियाँ में महानगर में रहकर और वहाँ की भीड़ का हिस्सा बनकर महानगर के बोध को झोला गया है। अर्थात् महानगर के परिवेश और स्थान के तत्वों के भीतर रहने वाले लोगों का महानगर बोध उद्घाटित हुआ है।

अन्य देशों के महानगरों से भारत के महानगरों की स्थिति कुछ भिन्न है। हमारे यहाँ महानगर अपने मौलिक और पूर्णरूप में आधुनिक महानगर नहीं है, बल्कि इनके भीतर अपने भग्न और नष्टप्राय होते हुए रूप में ही क्यों न हो गाँव और कस्बों की चेतना तथा संस्कृति विद्यमान है। अपने बाहरी या भौतिक रूप में ये अवश्य आधुनिक हैं क्यों कि यहाँ सारे वैज्ञानिक और मशीनी उपकरण स्थापित हो चुके हैं। किंतु इन सबके बीच रहने वाला मनुष्य अभी पूरी तरह से आधुनिक नहीं है। मानसिक स्तर पर वह कस्बाबोध से पूर्णतः मुक्त नहीं हो पाया है। कमलेश्वर की प्रारंभिक कहानियों में इसी कस्बाबोध में संस्कारित व्यक्ति का महानगर बोध अभिव्यक्त हुआ है। इसलिए ये कहानियाँ कस्बाबोध और महानगर बोध में द्वंद्व की कहानियाँ है।

महानगर में पहुँचकर भी कस्बाई चेतना से पोषित मन बार-बार छूटे हुए गाँव की याद करता है, जहाँ हर वस्तु में मानवीय संस्पर्श का अहसास था । जबकि महानगर इसके बिलकुल विपरीत अमानवीयकरण की प्रवृत्ति बढती जा रही है। यहाँ इनसानी रिश्ते औपचारिकता तक सीमित रह गए हैं जिनमें मानवीय संवेदना की उष्मा के स्थान पर केवल एक ठंडापन और जड़ता है। इसके साथ ही साथ है महानगरों में बढ़ती हुई

भीड़। कमलेश्वर की कहानियों का व्यक्ति इन्हीं संस्थाओं के बीच से उभरा इन्हीं संस्थाओं के बीच से उभरा व्यक्ति है और इसकी ज़िंदगी को विभिन्न कोणों से कमलेश्वर ने देखा और विश्लेषित किया है। 'मुरदों की दुनिया' कहानी आधुनिकता के आगमन और कस्बाबोध तथा महानगर बोध के बीच द्वंद्व की सूचना देती है। भौतिक स्वरूप में परिवर्तन के द्वारा यहाँ आधुनिकता का आगमन दिखाया गया है। कस्बे के लोगों में परस्पर अनौपचारिक भोली आत्मीय भावना उनकी जिंदगी का एक अभिन्न अंग होती है। यह स्नेह संवेदना केवल मनुष्य के लिए नहीं बल्कि प्राणिमात्र के लिए होती है।

'मुरदों की दुनिया' का निसार भी अपने मन की सारी आत्मीयता और स्नेह अपने बकरे नूर के प्रति व्यक्त करता है। नूर का साथ और बस के अड्डे की रौनक, भीड़ और चीख-पुकार यही सब निसार का जीवन है। नूर को भी उसने किसी स्वार्थवश नहीं पाला है। इस प्रकार निसार की सारी मानसिकता और जीवन-दृष्टिकोण कपट रहित और अत्यंत सहज तथा सरल है। बस-अड्डे का परिवेश और निसार की मानसिकता के बीच सुसंगत संबंध है। यह परिवेश उसे जीवंत होने की अनुभूति और अपनेपन का बोध देता है। क्योंकि उसकी सारी मानसिकता उसी से निर्मित और चालित है। किंतु सावित्री के व्यवहार और परिवेश के परिवर्तन से निसार की मानसिकता को झटका लगता है। जिस सावित्रि के पास बैठकर वह अपनेपन की अनुभूति पाता था, वही सावित्री उसके जीवन-केंद्र नूर को पैसों के लिए कसाई के हाथों बेच देती है। यहाँ व्यावसायिक और आर्थिक धरातल पर पनपते मानवीय संबंधों का संकेत है। साथ ही यह भी कि बदलते परिवेश का निसार का कस्बाई मन आसानी से स्वीकार नहीं कर पाता। लारी की जगह नयी सरकारी बसों का आगमन परिवर्तन के कारण के रूप में आता है। जिसके परिणाम स्वरूप अड्डे का सारा वातावरण और परिवेश ही बदल जाता है। बसों के आगमन से निसार की आर्थिक आय का साधन तो छिन ही जाता है, साथ ही नये परिवेश से वह मानसिक स्तर पर संसिक्त नहीं हो पाता। आर्थिक आय के अभाव से अधिक कसक निसार के भीतर बदले हुए परिवेश को लेकर है। परिवर्तन की प्रक्रिया यहाँ पूरी नहीं हुई है। परिवर्तन का प्रारंभ हो जाने का संकेत यहाँ मिलता है। निसार के मन में इस बदलते परिवेश को लेकर छटपटाहट और अद्विग्नता है ओर साथ ही पुरानी जिंदगी को पा जाने की आशा भी है। कस्बे महानगर बोध का आगमन अर्थात् आधुनिकता की प्रक्रिया के शरुआत की स्थिति यहाँ मिलती है। इस शुरुआत से व्यक्ति के मन में उत्पन्न संघर्ष और मानसिक तनाव को भी अभिव्यक्त किया गया है। निसार की मुद्रा में इस परिवर्तन के प्रति नकार बोध है और परिवर्तन उसके लिये संकट का बोध है।

———